

सोलह कारण भावना परिशीलन



मयूर पिच्छिधारी श्रमणाचार्य विमदसागरजी महाराज

विषय दर्पण

ज्ञानानुभव स्वर	- उपाध्याय अनुभव सागर
दर्शन विशुद्धि भावना अन्वेषण	- प्राचार्य डॉ.शीतलचन्द जैन
विनय सम्पन्नता भावना अन्वेषण	- डॉ.श्रीमती कल्पना जैन
शीलव्रत अनतिचार भावना अन्वेषण	- डॉ.सनतकुमार जैन
अभीक्षण ज्ञानोपयोग भावना अन्वेषण	- प्रोफेसर प्रेम सुमन जैन
संवेग भावना का अनुशीलन	- डॉ.राजेश जैन
शक्तितस्त्याग भावना अन्वेषण	- प्रो.श्रेयांशकुमार सिंघई
शक्तितस्तप भावना अन्वेषण	- डॉ.प्रेमचन्द्र रांवका
साधुसमाधि भावना अन्वेषण	- व्याख्याता मधु जैन
साधुसमाधि भावना अन्वेषण	- डॉ.श्रीमती सरोज जैन
वैयावृत्य भावना अन्वेषण	- डॉ.तारा डागा
वैयावृत्य भावना	- डॉ.बबीता जैन
अर्हद्भक्ति भावना अन्वेषण	- प्रो.जिनेन्द्रकुमार जैन
आचार्य भक्ति भावना अन्वेषण	- प्रो.दीनानाथ शर्मा
आचार्य भक्ति भावना अन्वेषण	- डॉ.देव कोठारी
बहुश्रुत भक्ति भावना अन्वेषण	- डॉ.उदयचन्द्र जैन
बहुश्रुतभक्ति भावना	- वीरचन्द्र जैन
बहुश्रुतभक्ति भावना अन्वेषण	- पं.सुरेश जैन मारौरा
आवश्यकपरिहाणि भावना अन्वेषण	- डॉ.महावीरप्रसाद शास्त्री
मार्ग प्रभावना भावना	- डॉ.अनिलकुमार जैन
मार्ग प्रभावना भावना	- डॉ.सत्यनारायण भारद्वाज
मार्ग प्रभावना भावना अन्वेषण	- डॉ.रेखा जैन
प्रवचन वत्सलत्व भावना	- डॉ.योगेशकुमार जैन
प्रवचन वत्सलत्व भावना	- डॉ.गजेन्द्रकुमार जैन
विद्वत संगोष्ठी में शंका समाधान भावना अन्वेषण एक अनुशीलन - सत्र	

जी त
संगो
हुई।

आ
भा
पुष्
के
उस
गा
छ
ति
नि
स
प

सोलह कारण भावनाओं में मार्ग प्रभावना का वैशिष्ट्य

- डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज,
लाडनू

भारतीय दर्शनों में मनुष्य जीवन को श्रेष्ठ एवं उपयोगी बनाने के लिए अनेक प्रकार के चिन्तन प्रस्तुत किये गये हैं। इन दर्शनों में जैनधर्म दर्शन अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, जिसमें मनुष्य के आत्मिक उत्थान पर अत्यधिक बल दिया गया है। अनेक उपायों के द्वारा मनुष्य अपना आत्मिक उत्थान कर सकता है। इन उपायों में व्रत, तप, साधना, पुण्यकर्म, कारण भावनाएँ आदि प्रमुख हैं। मेरा शोधालेख इन्हीं सोलह कारण भावनाओं में से मार्ग प्रभावना भावना पर आधारित है।

भावना -

**वीर्यान्तरायक्षयोपशमचारित्रमोहोपशमक्षयोपशमांगोपांगनाम
लाभापेक्षेण आत्मानां भाव्यन्त ता इति भावना।**

अर्थात् वीर्यान्तराय, क्षयोपशम चारित्रमोहोपशम-क्षयोपशम और अंगोपांग नाम कर्मोदय की अपेक्षा रखनेवाले आत्मा के द्वारा जो भायी जाती है और जिनका बार-बार अनुशीलन किया जाता है, वे भावना हैं। ज्ञातेऽर्थे पुनः पुनश्चिन्तनं भावना जाने हुए अर्थ का पुनःपुनः चिन्तन करना भावना है।

भावना ही पुण्य-पाप, राग-वैराग्य, संसार व मोक्ष आदि का कारण है। अतः जीव को सर्वदा कुत्सित भावनाओं का त्याग कर के उत्तम भावनाएँ भानी चाहिए। सम्यक् प्रकार से भायी गई सोलह उत्तम भावनाएँ व्यक्ति को सर्वोत्कृष्ट तीर्थंकर पद में स्थापित करने में समर्थ है।

सोलहकारण भावना परिशीलन